औषध द्रव्यों का त्रिदोष गुण विवेचन

रमेश कुमार भूत्या

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

Jh /kUoUrj;s ue%

औषध द्रव्यों का त्रिदोष गुण विवेचन

आयुर्वेद के औषध द्रव्यों का त्रिदोषानुसार एवं उनके गुणानुसार तर तम भेद से गुण विवेचन

y[kd ,o foopd

Mkñ jes'k dqekj HkkR;k

पूर्व उपनिदेशक,
आयुर्वेद विभाग, कोटा संभाग, कोटा (राज०)

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

i/dk'kd

lkbafUVfQd ifCy'klZ ¼bafM;k½
5–ए, न्यू पाली रोड़, पो.बॉ. नं. 91
जोधपुर – 342 001
टेलिफोन – 0291 2433323
फैक्स – 0291 2624154
E-mail: info@scientificpub.com

lkbafUVfQd ifCy'klZ ¼bafM;k½
4806/24, अंसारी रोड़,
दरियागंज
नई दिल्ली – 110 002 (भारत)
E-mail: delhi@scientificpub.com

प्रत्याख्यान – Limits of Liability and Disclaimer of Warranty
लेखक ने इस पुस्तक की शुद्धता के बारे में पूरा प्रयत्न एवं पूरी सावधानी रखी है, फिर भी लेखक इस पुस्तक के किसी तथ्य, भाग, विषय या अन्य कथ्य की प्रमाणिकता के बारे में कोई दावा नहीं करता है। लेखक इस पुस्तक के आधार पर की गई चिकित्सा के परिणाम का उत्तरदायी नहीं होगा। इस पुस्तक के आधार पर चिकित्सा करने से पूर्व आयुर्वेद व द्रव्यगुण विज्ञान के योग्य व अनुभवी विशेषज्ञ चिकित्सक का परामर्श लेवें।

© डॉ. रमेश कुमार भूत्या, 2016

ISBN: 978-81-7233-958-6
eISBN: 978-93-87307-60-5

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना माइक्रो फिल्म, फोटोस्टेट या अन्य किसी भी प्रकार से प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

लेजर टाईपसेट – राजेश ओझा
भारत में मुद्रित

lei.k

ej; lgdeh ,o fe=

ij.kkLin iFkin'kd ,o mRlkgh oKkfud

Mk- vkeidk'k prqosnh

t ; iqj ¼jk tLFkku½

Mk- v'kkd dqekj lDluk

cnh ¼jk tLFkku½

Mk- iÙkkflg lkydh

dkVk ¼jk tLFkku½

Mk- jk/k';ke xxZ

ckjk ¼jk tLFkku½

ifl) vk;qofnd fpfdRld

प्रो. (डॉ.) मेधावी लाल शर्मा
MSAM, FRAV
पूर्व कुलपति,
गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर
निदेशक, कैंसर रिलीफ एण्ड
रिसर्च सोसायटी ऑफ आयुर्वेद, उदयपुर (राज.)

"आयुर्वेदोऽमृतानाम"

मोबाईल नं. : 9414158289
ई-मेल : medhavisharma1950@gmail.com

प्रस्तावना

विसर्गादान विक्षेपो सोम सूर्यानिलस्यथा। धारयन्ति जगद्देहं कफ पित्तानिलास्तथा।।
अर्थात् संसार में जैसी भूमिका चन्द्र, सूर्य एवं वायु की है, वैसी ही भूमिका इस शरीर में वात, पित्त, कफ की है। त्रिदोष साम्य से शरीर का धारण होता है एवं पांचभौतिक द्रव्यों के द्वारा त्रिदोष साम्य स्थापित किया जाता है। आज से हजारों वर्ष पूर्व त्रिदोष एवं पंच महाभूत के सिद्धान्तों का सृजन होना वस्तुतः अद्भुत् है। यह त्रिकालदर्शी महर्षियों के पर्यवेक्षण (Observation) का ही परिणाम है। अनेक पर्यवेक्षणों के द्वारा ही महर्षियों ने त्रिदोष, वानस्पतिक एवं जान्तव द्रव्यों की विभिन्न रोगों पर उपयोगिता सिद्ध की है।

यह पुस्तक इसी त्रिदोष सिद्धान्त एवं वनौषधियों के उन पर प्रभाव के बारे में है। यह विषय बहुत मौलिक व व्यापक है। इस विषय पर आयुर्वेद जगत में विद्वानों की विचार गोष्ठियों एवं सम्भाषा परिषदों में विचार विमर्श करके निर्णय किया जाना समीचीन होगा। यह पुस्तक इस विषय का आरंभ है, इसको और आगे ले जाना एवं ओर अधिक शुद्धिकरण करना उचित होगा।

'औषध द्रव्यों का त्रिदोष गुण विवेचन' नामक इस पुस्तक में लेखक ने अपने जीवन के चिकित्सकीय अनुभव के आधार पर गहन परिश्रम कर इस पुस्तक को मूर्तरुप दिया है जो एक नवीन कार्य है। जिस विधि से इस पुस्तक में वात, पित्त, कफ पर प्रभावी द्रव्यों को, गुणों के तर तम भेद से प्रदर्शित किया गया है वह पढ़ने वाले के मन, मस्तिष्क को प्रभावित करता है। यद्यपि विद्वान विषय विशेषज्ञों को कुछ स्थानों पर विषयान्तर दृष्टिगोचर हो सकता है एवं विषयवस्तु के एकीकृत संघटित स्वरुप के दर्शन नहीं हो पायेगें फिर भी मैं समझता हूँ कि यही इस पुस्तक का निजत्व है।

अपने आप को लेखकीय धर्म में दीक्षित मानने वाले द्रव्यगुण विज्ञान के विद्वान लेखकों को इस प्रकार का सरल, सहज एवं स्वभाविक लेखन संभवतः असम्बद्ध लगे किन्तु मेरी दृष्टि में ऐसा सरल एवं सहज लेखन एक दुष्कर कार्य है जिसें विद्वान लेखक श्री रमेश कुमार भूत्या ने सहजता से पूर्ण किया है। इसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक डॉ. रमेश कुमार भूत्या, आयुर्वेद विभाग राजस्थान में उपनिदेशक, कोटा सम्भाग, के पद पर कार्यरत रहे हैं। ये प्रसिद्ध चिकित्सक एवं कई उपयोगी पुस्तकों के लेखक रहे हैं। वनस्पति औषध विज्ञान एवं आयुर्वेदिक मेडिसिनल प्लान्ट्स आफ इन्डिया, इनकी उपयोगी पुस्तकों में से है। श्री भूत्या ने द्रव्यगुण विज्ञान पर बहुत गहनता से अनुसन्धान परक कार्य किया है। औषध द्रव्यों का त्रिदोष पर पड़ने वाले प्रभावों का तर तम भेद से आकलन कर उपयोगी कार्य किया है। इसके भी परे त्रिदोष के सात सात गुणों पर औषध द्रव्यों के पड़ने वाले प्रभावों का तरतम भेद से विवेचन कर एक उपयोगी कार्य किया है। शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, गुरु, लघु औषध द्रव्यों का गुणात्मक रुप से तरतम भेद से विवेचन भी किया है।

विद्वान लेखकं ने द्रव्यगुण विज्ञान के क्षैत्र में मौलिक अनुसन्धान करके, परिश्रम पूर्वक सारगर्भित लेखन कर आयुर्वेद के विद्वत् समाज के सम्मुख उपयोगी पुस्तक प्रस्तुत की है। मैं लेखक को इस अतीव उपयोगी एवं मौलिक साहित्य सृजन के लिये हृदय से बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसा उपयोगी साहित्य सृजन करते रहेगें।

09.10.2015

ikDdFku

वर्षों से यह अनुभव किया जाता रहा है कि आयुर्वेदीय औषध चिकित्सा में वो एक्यूरेसी नहीं आ पा रही जो एलोपेथीक औषधों में है। औषधों का ऐक्सन कैसे होता है, क्यों होता है, क्या होता है, कब तक होता है अथवा रक्त या मूत्रादि पर क्या परिवर्तन आते हैं, इसका कुछ पता नहीं होता है। औषध को कितने दिन देना है अथवा यदि प्रभाव नहीं हो रहा है तो कितने दिन बाद औषध को बन्द करना है, इसका कुछ पता नहीं होता। प्रायः आयुर्वेदीय औषधों में यही लिखा रहता है कि अमुक रोग में लाभ करती है किन्तु कितने दिन में कितना लाभ करेगी, यह वर्णन नहीं मिलता।

आयुर्वेद का मूल आधार औषधीय वनस्पतियां अथवा द्रव्यगुण विज्ञान है। औषध द्रव्यों के, वात, पित्त, एवं कफ के उपर एवं इनके 7–7 उष्ण, रुक्षादि गुणों पर होने वाले प्रभावों को ध्यान में रख कर ही औषधियों का निर्माण किया जाता है। किन्तु यदि हम देखें तो ज्ञात होगा कि अश्वगन्धा, एरण्ड, शतावरी, घृत, तैल, दशमूल, निर्गुण्डी, माष, अजवायन इत्यादि वातनाशक औषध द्रव्यों का वातनाशन प्रभाव, मात्रात्मक एवं गुणात्मक रुप से एक जैसा नहीं है। कुछ का प्रभाव अल्प (+ या 25% या Trivial) है तो किसी का मध्यम (++ या 50% या Mild), किसी का उत्तम (+++ या 75% या Moderate) है तो किसी का अति उत्तम (++++ या 100% या Severe)। अतः हम इनको एक जैसा मान कर प्रयोग नहीं कर सकते है। इसी तरह कशेरुक, श्रृंगाटक, अमृता, चन्दन, शहतूत, पित्तपापडा, कमल, गुलाब आदि का पित्तनाशन भी एक जैसा नहीं है एवं वत्सनाभ, रसोन, धत्तूर, केसर, काकडासिंगी, भल्लातक, तिन्दुक, कण्टकारी, पुष्करमूल, पीलू का कफनाशन भी एक जैसा नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि वातसंशमन वर्ग या विदारिगन्धादि गण या अन्य महाकषाय की औषधियों को एकत्र कर हर वात रोगों में प्रयोग कर, इच्छित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। इसका कारण यह है कि इनका वात नाशत्व चाहे मात्रात्मक रुप से समान हो किन्तु गुणात्मक रुप से एक समान नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इससे भी आगे जाकर औषध द्रव्यों का, वात के सात गुणों (लघु रुक्ष सूक्ष्म शीत चलोऽथ विशद खरः) पर ग्रेडिंग या वरियता या कार्मुकता की मात्रा को दर्शा सके। इसी तरह पित्त व कफ के 7–7 गुणों पर ग्रेडिंग करने की आवश्यकता है।

विज्ञान एक निरन्तर परिष्कृत किये जाने योग्य विधा है। आयुर्वेद भी एक विज्ञान है। ठहरा हुआ जल व ज्ञान दोनों सड़ जाते है। शालिग्राम निघण्टु में लिखा है कि 'तेभ्यः सकाशादुपलभ्य वैद्यः पश्चाच्च शास्त्रेषु विमृश्य बुद्ध्या। विकल्पयेद् द्रव्यरसप्रभावान् विपाकवीर्याणि तथा प्रयोगात्।। अर्थात् वैद्य सर्वप्रथम उनसे (किरात, गोपालक, तपस्वी, वनवासी आदि) द्रव्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें, तत्पश्चात् शास्त्रानुसार तथा अपनी बुद्धि से विचार कर उनके रस, विपाक, वीर्य और प्रभाव का निर्धारण करें तथा प्रयोग से उनकी सम्पुष्टि करें।

अभी तक शास्त्रों में औषध द्रव्यों का मात्रात्मक एवं गुणात्मक त्रिदोषनाशत्व एवं औषध द्रव्यों के स्निग्ध, शीत, गुरु आदि गुणों का वह वर्णन उपलब्ध नहीं होता जो इनकी ग्रेडिंग या वरीयता या कार्मुकता की मात्रा को दर्शा सके। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इन द्रव्यों के दोषनाशत्व के अन्तर को समझ कर हम चिकित्सा करें ताकि हम पिन प्वाइन्ट एक्यूरेसी प्राप्त कर सकें।

यहाँ यह भी जानकारी देना आवश्यक है कि आयुर्वेद के आर्ष ग्रन्थों, विभिन्न निघण्टुओं एवं द्रव्यगुण विज्ञान की अन्य पुस्तकों में सभी औषध द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य एवं विपाक का सम्पूर्ण वर्णन नहीं है। यहाँ तक कि कुमारी, गोखरु, पाटला, जटामांसी, मूसली, वासा, शंखपुष्पी, वाराहीकनद, श्योनाक, सुदर्शन, स्वर्णक्षीरी एवं हरिद्रा जैसे महत्वपूर्ण द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य एवं विपाक का सम्पूर्ण वर्णन नहीं है। नई पीढी के लिये इसका सम्पूरित होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कौन सा द्रव्य कितना स्निग्ध या रुक्ष अथवा शीत या उष्ण अथवा गुरु या लघु है, इसका वर्णन भी शास्त्रों में नहीं मिलता। एरण्ड, तिल, अश्वगन्धा, कदली, कुमारी, अमृता, प्रियाल, धान्यक, जटामांसी, समान रुप से स्निग्ध नहीं हैं, एवं जम्बू, आमलकी, चित्रक, निम्ब, पूग, कटुका, दारुहरिद्रा, मेथिका, अम्लिका, समान रुप से रुक्ष नहीं हैं एवं चन्दन, शतावरी, मुलेठी, ब्राह्मी, कदली, यव, कमल, करेला, कुटकी, मुस्तक समान रुप से शीत नहीं हैं एवं रास्ना, ज्योतिष्मति, अगुरु, मरिच, अतसी, पटोल, अतिविषा, अमृता समान रुप से उष्ण नहीं हैं। इसी तरह द्राक्षा, आम्र, प्रियाल, मखान्न, वट, शतावरी, मधुयष्ठी, अनन्तमूल समान रुप से गुरु एवं जीरक, तुलसी, चणक, अंकोल, कण्टकारी, कटुका, कमल, शतपत्री समान रुप से लघु नहीं है। अब यह समय आ गया है कि हम इनकी ग्रेड़िग या वरीयता या कार्मुकता तय करें, ताकि आगे आने वाली पीढी को इनके गुणों के चयन हेतु भटकना नहीं पड़े।

प्रस्तुत पुस्तक में इन्ही सब बातों पर विचार करके मुख्य मुख्य औषध द्रव्यों के त्रिदोष पर पडने वाले प्रभाव का मात्रात्मक एवं गुणात्मक या तर तम भेद का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में निम्न बिन्दुओं का वर्णन किया गया हैः–

1. औषध द्रव्य का नाम।
2. औषध द्रव्य के संस्कृत नाम।
3. संहिताओं के महाकषाय अथवा गणों का उल्लेख।
4. औषध द्रव्य का विभिन्न स्रोत्स पर प्रभाव का उल्लेख।
5. औषध द्रव्य के रस, गुण, वीर्य, विपाक का शास्त्रीय उल्लेख एवं जहां इनका शास्त्रीय उल्लेख नहीं उपलब्ध होता वहां उसकी पूर्ति।
6. औषध द्रव्य के वात, पित्त, कफ के नाशत्व का उल्लेख एवं प्रभाव की ग्रेडिंग।
7. औषध द्रव्य के वात, पित्त, कफ के कारत्व का उल्लेख एवं प्रभाव की ग्रेडिंग।
8. औषध द्रव्य के विभिन्न संहिता ग्रन्थों एव निघण्टुओं व अन्य शास्त्रीय पुस्तकों में नाम एवं गुणों के सम्पूर्ण सन्दर्भ श्लोकों का संग्रह।

9. औषध द्रव्यों के वात, पित्त, कफ के 7–7 गुणों, कुल 21 गुणों के नाशत्व की ग्रेडिंग की सूचियां।
10. विभिन्न स्रोतोदुष्टि में कार्यकारी औषध द्रव्यों की सूचि।
11. औषध द्रव्यों के शीत, उष्ण, गुरु, लघु, स्निग्ध, रुक्ष होने की ग्रेड़िंग।
12. औषध द्रव्यों के गुणों के शास्त्रीय सन्दर्भ।

यहाँ यह प्रश्न उठना सामयिक एवं स्वाभाविक है एवं मेरे कई मित्रों ने यह प्रश्न उठाया भी है कि इन सारी ग्रेडिंग या वरियता या कार्मुकता की मात्रा का आधार या प्रमाण क्या है! इसके उत्तर में निम्न प्रमाण दिये जाते हैं :–

1. विभिन्न संहिता ग्रन्थों एव निघण्टुओं व अन्य शास्त्रीय पुस्तकों में उल्लेखित, औषध द्रव्यों के विभिन्न गुणों के आधार पर।
2. विभिन्न संहिता ग्रन्थों में उल्लेखित औषध द्रव्यों के वर्गीकरण एवं उनके सन्दर्भ में वर्णित कार्य या रोगनाशन के आधार पर, जैसे चरक के महाकषायों में दाहप्रशमन, बल्य या श्वासहर अथवा सुश्रुत में वातसंशमन वर्ग या विदारिगन्धादि गणों के साथ वर्णित सन्र्दभों के आधार पर।
3. नामकरण से अनुमान – औषध द्रव्यों के नामों सें उनके प्रभाव का ज्ञान होता है जैसे वयस्या, रसायनी, अनिलघ्नी, कामांग, वृष्या, रेचन, वह्नीदीपिका, दीप्या, वातारि, शूलहन्त्री, शीता, पिच्छिला, बला, अतिबला, कटुतिक्तक, तिक्ता, अनिलापहा, तुवरक, कुष्ठवैरी इत्यादि।
4. आचार्यों के द्वारा तत् तत् द्रव्यों के तत् तत् व्याधि की चिकित्सा में एक या बार बार उपयोग के निर्देश के आधार पर।
5. विभिन्न संहिता ग्रन्थों में उल्लेखित अग्रय संग्रहणीय द्रव्यों के वर्णन के आधार पर।
6. वानस्पतिक औषध द्रव्यों से ही चिकित्सा करने वाले अपने अपने क्षैत्रों में प्रसिद्ध विभिन्न चिकित्सकों से प्राप्त उनके अनुभव का आधार।
7. औषध द्रव्यो से चिकित्सा करते हुए अपने निजी अनुभव का आधार। ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक में आयुर्वेद के मुख्य 500 द्रव्यों में से 254 का ही विवेचन किया गया है क्योंकि हमनें इन्हीं द्रव्यों का प्रयोग करके देखा है एवं इन्ही का अनुभव किया है।
8. औषध द्रव्यो से चिकित्सा करते हुए अपने निजी अनुभव के आधार पर की गई परिकल्पना या अनुमान या हाईपोथिसिस का आधार। आयुर्वेद में अनुमान को भी प्रमाण माना गया है। यह सही है कि इसमें त्रुटियों की संभावना है किन्तु इस कार्य को कहीं से तो आरंभ करना ही होगा। आगे चल कर संम्भाषा परिषदो में बहस के माध्यम से इन त्रुटियों को समाप्त किया जा सकता है।
9. यहाँ पर यह ध्यान रखना आवश्यक हे कि सभी औषध द्रव्य रस, गुण, वीर्य, विपाक से कार्य नहीं करते। कुछ रस से, कुछ गुण से, कुछ वीर्य से, कुछ विपाक से और कुछ अपने प्रभाव से कार्य करते हैं।

10. आचार्यों ने कहा भी है कि व्याधिहर औषध द्रव्य दोषशामक होते हैं किन्तु दोषहर द्रव्यों का व्याधिहर होना आवश्यक नहीं है।

यहां पर यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है कि व्यवहारिक रुप से चिकित्सा करते समय इस पुस्तक के ज्ञान का कैसे उपयोग किया जा सकेगा। इसका उत्तर यह है कि इस पुस्तक में आगे चल कर त्रिदोषों के 21 गुणों की, औषध द्रव्यवार ग्रेडिंग की गई है। इसमें वर्णन है कि ++++ में अमुक गुण को नष्ट करने वाले द्रव्य कितने हैं ओर +++ में कितने ओर ++ में कितने। इससे हमें रोगों की चिकित्सा करने में सुविधा होगी। उदाहरण के लिये किसी रोगी को कम्पवात है तो हमें यह अनुमान होता है कि यहां वात के चल गुण की वृद्धि हो गई है अतः चल गुण को नष्ट करने वाली सूची में से ++++ एवं +++ में चल गुण को नष्ट करने वाली कितनी औषधियां हमारे पास उपलब्ध हैं ओर उस सूची में से औषधियां एकत्र कर हम कम्पवात की ज्यादा एक्यूरेसी से चिकित्सा कर सकेगें। इसी तरह शरीर में कोलेस्ट्रोल की वृद्धि होने पर रुक्ष एवं उष्ण गुण को ++++ एवं +++ में नष्ट करने वाली औषधियों की सूची देख कर ज्यादा बेहतर रुप से रोग की चिकित्सा कर सकेगें। इसका सॉफ्टवेयर भी बनाया जा सकता है।

शास्त्रों में वर्णित एक रोग में विभिन्न योग एवं विभिन्न रोगों में एक योग का प्रयोग, जो दृष्टिगोचर होता है, इसका निश्चित ही वैज्ञानिक आधार रहा होगा। किन्तु दुर्भाग्यवश इसका विशद विवेचन उपलब्ध नहीं है। यदि प्रत्येक द्रव्य का तर तम अशांश कल्पना के आधार पर वर्णन उपलब्ध हो जाये तो आगे आने वाली पीढी को योगों के चयन हेतु भटकना नहीं पडेगा।

मैं यह सविनय निवेदन करना चाहूंगा कि प्रस्तुत पुस्तक शास्त्रों की वैज्ञानिक अवधारणा के आधार पर विवेचना प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास है। यहाँ आयुर्वेद के इस इस अनछुए पहलु का वर्णन किया गया है। मैं यह समझता हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक इस विषय एवं इस दिशा में चिन्तन मनन की शुरुआत भर है, ओर आयुर्वेद जगत में इस पर पर्याप्त बहस की आवश्यकता है। मैं चाहता हूँ कि विद्वान मेरे इस तुच्छ प्रयास को आगे ले जायेगें एवं इस महान आयुर्वेद विज्ञान की वैज्ञानिकता को सिद्ध किया जा सकेगा।

इस पुस्तक के लेखन में आदरणीय आर्ष ऋषियों, आचार्यों, कई लेखकों व पुस्तकों की सहायता ली गई है, मैं उन सबका ह्रदय से आभारी हूँ।

प्रेरणा, उत्साहवर्धन एवं सहयोग के लिये मैं स्व॰ डॉ॰ ओमप्रकाश चतुर्वेदी, जयपुर, डॉ॰ पत्तासिंह सोलंकी, कोटा, डॉ॰ राधेश्याम गर्ग, बारां, डॉ॰ अशोक सक्सेना, बून्दी, डॉ॰ जगदीश शर्मा, बून्दी एवं डॉ॰ श्रीकृष्ण खाण्डल, जयपुर, डॉ॰ कीर्ति कुमार जैन, कोटा, डॉ॰ श्रीराम शर्मा, उदयपुर, डॉ॰ राजेन्द्र सिंह सोलंकी, बून्दी, डॉ॰ आशुतोष शर्मा एवं डॉ॰ सुशीला शर्मा, जयपुर का बहुत आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त मेरे दामाद श्री सत्यवान शर्मा, पुत्री श्रीमति कामिनी शर्मा, पुत्र दुष्यन्त शर्मा, पुत्रवधू श्रीमति कीर्ति शर्मा, भतीजे मिलिन्द शर्मा, श्रीमति कुमुद शर्मा का उनके उत्साहवर्धन के लिये धन्यवाद देता हूँ। मैं धर्मपत्नी श्रीमति मंजू शर्मा का उनके अपूर्व धैर्य के लिये अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ।

अन्त में मैं साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया) के भाई सा० श्री पवनकुमार शर्मा, श्री तनय शर्मा, श्री राजेश ओझा को उनके सहयोग के लिये कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिसके कारण ही इस पुस्तक का साकार होना संभव हो पाया।

कोई पुस्तक कभी सम्पूर्ण नहीं होती, गलतियाँ होना स्वाभाविक है, अतः सभी विद्वानों से गलतियों के लिये क्षमा चाहते हुये, विद्वान पाठकों के अमूल्य उपयोगी सुझाव, मार्गदर्शन व समालोचना सादर आमंत्रित हैं। मैं उनका बहुत आभारी रहूंगा।

अन्त में कबीरदासजी के निम्न सूक्त से अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा –

^rsjk esjk euok cUns dsls ,d gks; jsA
eSa dgrk gq vkj[kuns[kh] rq dgrk gS dkxnys[khA
eSa dgrk lqy>kougkjh] rq nsrk my>k; js^A

विनयावनत

Mkñ jes'k dqekj HkkR;k
पूर्व उपनिदेशक, आयुर्वेद विभाग राजस्थान,
कोटा सम्भाग, कोटा, राजस्थान
3/25, केशवराय पाटन (जिला बून्दी) राज०
मो. 94145 38301,
ई–मेल rameshbhutya@gmail.com

vk"k/k lph

Ø-	uke vk"k/k	i"B	Ø-	uke vk"k/k	i"B
1	अंकोल	1	30	एला लघु	47
2	अगुरु	2	31	एला वृहत	48
3	अग्निमंथ	4	32	कंकोल	49
4	अजमोद	5	33	कटुका	51
5	अतसी	7	34	कण्टकारी	52
6	अतिबला	8	35	कतक	54
7	अतिविषा	9	36	कदम्ब	55
8	अनन्तमूल	11	37	कदली	57
9	अपामार्ग	12	38	कपिकच्छू	59
10	अमृता	13	39	कपित्थ	60
11	अम्लिका	15	40	कमल	62
12	अर्क	17	41	कम्पिल्लक	64
13	अर्जुन	19	42	करंज	66
14	अशोक	21	43	करवीर	68
15	अश्वगन्धा	22	44	कर्कटश्रृंगी	69
16	अश्वगोल	23	45	कर्चूर	70
17	अश्वत्थ	24	46	कर्पूर	72
18	अस्थिसंहारी	26	47	करीर	73
19	अहिफेन	27	48	कलाय	74
20	आकल्लक	29	49	कलिहारि	76
21	आखुकर्णी	30	50	कशेरुक	78
22	आमलकी	31	51	कांचनार	79
23	आम्र	33	52	काकमाची	80
24	आरग्वध	36	53	काकोदुम्बर	82
25	इन्द्रवारुणी	38	54	कारवेल्ल	83
26	ईक्षु	39	55	कार्पास	85
27	उदुम्बर	41	56	कालाजाजी	86
28	उशीर	43	57	काश	88
29	एरण्ड	44	58	कासमर्द	89

Ø-	uke vk"k/k	i"B
59	किराततिक्त	91
60	कुटज	92
61	कुपीलु	93
62	कुमारी	95
63	कुलञ्जन	96
64	कुलत्थ	97
65	कुश	98
66	कुष्ठ	100
67	कूष्माण्ड	101
68	केतकी	102
69	केसर	104
70	कोकिलाक्ष	105
71	खदिर	106
72	खर्जूर	108
73	गम्भारी	109
74	गाजर	111
75	गुग्गुलु	113
76	गुञ्जा	114
77	गोधूम	116
78	गोक्षुरु	117
79	चक्रमर्द	119
80	चणक	120
81	चन्दन रक्त	122
82	चन्दन श्वेत	123
83	चक्षुष्या	125
84	चांगेरी	126
85	चित्रक	128
86	जटामांसी	130
87	जपा	131
88	जम्बू	132
89	जयपाल	134
90	जाति	135
91	जातिफल	136
92	जीरक–कृष्ण	138
93	जीरक–श्वेत	139
94	जीवन्ती	141

Ø-	uke vk"k/k	i"B
95	ज्योतिष्मति	142
96	तगर	144
97	तवाक्षीरी	145
98	ताम्बूलवल्ली	146
99	तालमूली	148
100	तालीसपत्र	149
101	तिन्दुक	151
102	तिल	152
103	तुम्बुरु	153
104	तुलसी	154
105	तुवरक	156
106	तूद	157
107	तेजपत्र	158
108	दन्ती	160
109	दर्भ	161
110	दाडिम	162
111	दारुसिता	164
112	दारुहरिद्रा	165
113	द्राक्षा	166
114	द्वीपान्तर वचा	169
115	दुग्धिका	170
116	दूर्वा	171
117	देवदारु	173
118	द्रोणपुष्पी	174
119	धत्तूर	175
120	धन्वयास	177
121	धव	178
122	धातकी	179
123	धान्यक	180
124	नाकुली	182
125	नागकेसर	183
126	नाडीहिंगु	184
127	नारिकेल	186
128	निम्ब	188
129	निम्बू	190
130	निर्गुण्डी	191

Ø-	uke vk"k/k	i"B
131	पटोल	193
132	पद्माख	194
133	पर्पट	196
134	पलाण्डु	197
135	पलाश	199
136	पाटला	200
137	पाठा	201
138	पारसिक यवानी	203
139	पाषाणभेद	204
140	पिप्पली	206
141	प्रियंगु	207
142	प्रियाल	209
143	पीलु	211
144	पुनर्नवा	212
145	पुन्नाग	214
146	पुष्करमूल	215
147	पूग	216
148	पूतिहा	218
149	पृश्नपर्णी	219
150	पेरूक	220
151	प्लक्ष	222
152	फल्गु	223
153	बकुल	224
154	बदर	225
155	बबूल	227
156	बला	229
157	बालक	230
158	ब्राह्मी	231
159	बिल्व	233
160	बीजक	234
161	बोल	236
162	भंगा	237
163	भद्रमुंज	239
164	भल्लातक	240
165	भार्गी	242
166	भूमिसह	243

Ø-	uke vk"k/k	i"B
167	भूम्यामलकी	245
168	भृंगराज	246
169	मंजिष्ठा	248
170	मखान्न	249
171	मण्डूकपर्णी	250
172	मदनफल	252
173	मधुक	253
174	मधुकर्कटी	254
175	मधुयष्ठी	256
176	मरिच	257
177	मल्लिका	259
178	मसूर	260
179	महानिम्ब	262
180	मार्कण्डिका	263
181	माष	264
182	माषपर्णी	266
183	मिश्रेया	267
184	मुंजातक	269
185	मुद्ग	270
186	मुद्गपर्णी	271
187	मुन्डी	272
188	मुशली	273
189	मुष्कक	275
190	मुस्तक	276
191	मूर्वा	278
192	मूलिका	279
193	मेथिका	281
194	मेषश्रृङ्गी	282
195	यव	284
196	यवानिका	285
197	यवासा	287
198	रसोन	288
199	राजादन	290
200	राजिका	291
201	रास्ना	293
202	रोहितक	294

Ø-	uke vk"k/k	i"B
203	लज्जालु	296
204	लवंग	297
205	लोध्र	298
206	वंश	300
207	वचा	302
208	वट	303
209	वत्सनाभ	305
210	वरुण	306
211	वाताद	307
212	वाराहीकन्द	309
213	वाशा	310
214	विडंग	312
215	विदारी	313
216	विभितक	315
217	वृद्धदारुक	317
218	वृन्ताक	318
219	वृहती	320
220	शंखपुष्पी	321
221	शठी	323
222	शतपत्री	324
223	शतपुष्पा	325
224	शतावरी	327
225	शमी	329
226	शरपुंख	330
227	शल्लकी	331
228	शाल	333
229	शालपर्णी	334
230	शाली	336
231	शाल्मलि	337
232	शिंशिंपा	339
233	शितिवार	341
234	शिरीष	342
235	शुण्ठी	343
236	श्रृंगाटक	345
237	शेफालि	347
238	शैलेय	348
239	शोभान्जन	349
240	श्योनाक	351
241	श्लेष्मान्तक	353
242	सप्तपर्ण	354
243	सरल	355
244	सर्षप	356
245	सीताफल	358
246	सुदर्शन	359
247	सुवर्चला	360
248	सूरण	361
249	सेहुन्ड	363
250	सैरेयक	365
251	सोमराजी	366
252	स्वर्णक्षीरी	368
253	हरितकी	369
254	हरिद्रा	371
255	हिंगु	373
256	त्रिवृत्त	374

fo"k; lph

v/;k; 1 vk"k/k n0;k dk f=nk"k x.k foopu 1&376

v/;k; 2 lUnfHkr xUFkk d Lkf{klr #i 377

v/;k; 3 vk"k/k n0;k dk f=nk"k foopu 378&402

1. वृहत्त्रयी के शास्त्रीय सन्दर्भ 378
2. औषध द्रव्यों का दोष नाशत्व व तर तमता 383
3. त्रिदोष नाशक द्रव्य 388
4. वातनाशक द्रव्यों के प्रभाव की तर तमता सूची 389
5. पित्तनाशक द्रव्यों के प्रभाव की तर तमता की सूची 392
6. कफनाशक द्रव्यों की तर तमता की सूची 394
7. वात–पित्त नाशक द्रव्य 397
8. वात–कफ नाशक द्रव्य 397
9. पित्त–वात नाशक द्रव्य 398
10. पित्त–कफ नाशक द्रव्य 399
11. कफ–वात नाशक द्रव्य 400
12. कफ–पित्त नाशक द्रव्य 401

v/;k; 4- okr d fofHkUu x.kk ij vk"k/k n0;k d iHkko dk rj re foopu 403&421

1. वात के गुणों का तर तम विवेचन 403
2. वात के रूक्ष गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 413
3. वात के शीत गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 414
4. वात के लघु गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 416
5. वात के सूक्ष्म गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 417
6. वात के चल गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 418
7. वात के विशद गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 419
8. वात के खर गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 421

v/;k; 5- fiUk d fofHkUu x.kk ij vk"k/k n0;k d iHkko dk rj re foopu 423&444

1. पित्त के गुणों का तर तम विवेचन 423
2. पित्त के स्नेह गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 433
3. पित्त के उष्ण गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 435
4. पित्त के तीक्ष्ण गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 436
5. पित्त के द्रव गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 438
6. पित्त के अम्ल गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 440
7. पित्त के सर गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 442
8. पित्त के कटु गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 443

v/;k; 6- dQ d fofHkUu x.kk ij vk"k/k n0;k d iHkko dk rj re foopu 445&467

1. कफ के गुणों का तर तम विवेचन 445
2. कफ के गुरू गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 455
3. कफ के शीत गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 457

4. कफ के मृदु गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 459
5. कफ के स्निग्ध गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 460
6. कफ के मधुर गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 462
7. कफ के स्थिर गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 464
8. कफ के पिच्छिल गुण को नष्ट करने वाले द्रव्यों की सूची व तर तमता 465

v/;k; 7- vk"k/k n0;ksa dk jl] xq.k] oh;Z foikd foopu o rj rerk 468&529

1. औषध द्रव्यों के रस – मुख्य शास्त्रीय सन्दर्भ 468
2. औषध द्रव्यों के रस (मुख्य रस) 476
3. मधुर रस युक्त औषध द्रव्य (मुख्य रस) 485
4. अम्ल रस युक्त औषध द्रव्य (मुख्य रस) 486
5. लवण रस युक्त औषध द्रव्य (मुख्य रस) 486
6. कटु रस युक्त औषध द्रव्य (मुख्य रस) 487
7. तिक्त रस युक्त औषध द्रव्य (मुख्य रस) 487
8. कषाय रस युक्त द्रव्य (मुख्य रस) 488
9. औषध द्रव्यों के गुणों की तरतमता 489
10. स्निग्ध द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 498
11. रूक्ष द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 500
12. गुरु द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 502
13. लघु द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 503
14. शीत द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 505
15. उष्ण द्रव्य व उनके प्रभाव की तर तमता 507
16. अनुष्ण द्रव्य 508
17. चरक संहिता में शीत वीर्य औषध द्रव्यों की सूची 509
18. चरक संहिता में उष्ण वीर्य औषध द्रव्यों की सूची 511
19. स्निग्ध – गुरु द्रव्य 513
20. स्निग्ध – लघु द्रव्य 514
21. स्निग्ध – शीत द्रव्य 514
22. स्निग्ध – उष्ण द्रव्य 515
23. रूक्ष – गुरु द्रव्य 516
24. रूक्ष – लघु द्रव्य 516
25. रूक्ष – शीत द्रव्य 517
26. रूक्ष – उष्ण द्रव्य 518
27. गुरु – शीत द्रव्य 519
28. गुरु – उष्ण द्रव्य 520
29. लघु – शीत द्रव्य 520
30. लघु – उष्ण द्रव्य 521
31. द्रव्यों के विपाक 522
32. मधुर विपाकी द्रव्य 526
33. कटु विपाकी द्रव्य 527
34. अम्ल विपाकी द्रव्य 529

v/;k; 8- vk"k/kh; n0;ksa dh xq.kksa dh rjrerk dk ;wukuh lUnHkZ o vk;qosZn er ls rqyuk 530&540

1. औषध द्रव्यों का यूनानी दर्जा 530
2. औषध द्रव्यों के गुणों की यूनानी व आयुर्वेद मत से तुलना 535

v/;k; 9- vuqØef.kdk & okuLifrd uke&fgUnh uke 541&550

v/;k; 10- vuqØef.kdk & fgUnh uke&lkekU; uke 551&555

d'i ;k /;ku n

प्रस्तुत पुस्तक को ठीक से समझने के लिये कृपया निम्न बातों का ध्यान रखें।

1. पुस्तक में वर्णित पृष्ठों व तालिकाओं में संकेतों के निम्न अर्थ है :–

++++	का अर्थ	अति उत्तम प्रभाव	अथवा	76-100%	अथवा	Severe effect
+++	का अर्थ	उत्तम प्रभाव	अथवा	51-75%	अथवा	Moderate effect
++	का अर्थ	मध्यम प्रभाव	अथवा	26-50%	अथवा	Mild effect
+	का अर्थ	अल्प प्रभाव	अथवा	0-25%	अथवा	Trivial effect

2. द्रव्यों के वर्णन में टेबल में जहाँ अक्षरों को गहरा किया गया है इसका अर्थ यह है कि इस गुण का वर्णन शास्त्रों में आचार्यों ने नहीं किया है अतः इस गुण का वर्णन स्वविवेक से किया है। ऐसा गुणों की सम्पूर्णता के लिये किया गया है।